>

Title: Need to solve the problem of drinking water in Maharashtra and other parts of the country.

श्री दत्ता मेघे (वर्धा): महोदया, मैं सरकार का ध्यान महाराष्ट्र के अकाल और पीने के पानी की गंभीर समस्या की तरफ दिलाना चाहता हूं। गांव हो या शहर पेय जल की समस्या एक जैसी है। हालांकि महाराष्ट्र एक विकसित राज्य है। किन्तु राज्य की बहुत बड़ी आबादी पीने के पानी की गंभीर समस्या से जूझ रही है। पानी के लिए लम्बी कतारों में खड़ी औरतें एक आम दृश्य है। सामान्य परिस्थिति में भी महाराष्ट्र में पीने के पानी की गंभिर समस्या बनी रहती है। इस वर्ष महाराष्ट्र के अधिकतर जिलों मे आकाल है। विश्व बैंक के अनुसार महाराष्ट्र में लगभग 70 प्रतिशत गांव यानी 27600 गांव ऐसे हैं जहां पीने का पानी आसानी से उपलब्ध नहीं होता है। इतना ही नहीं, गांवों के एक-चौथाई परिवारों की सुरक्षित पेय जल तक पहुंच ही नहीं है। पीने के पानी के लिए महाराष्ट्र के गांव की महिला रोजाना दो घंटे का समय व्यतीत करती है। पानी की कमी महिलाओं के रोजमर्रा के कार्य पर सीधे असर करती है। ऐसी हालत में पानी की समस्या का हल निकालने के लिए टिकाऊ जल प्रबंधन की आवश्यकता है। महाराष्ट्र के लगभग हर विभाग में पीने के पानी का भीषण संकट है। हजारों गांवों में टैंकर से पानी की सप्लाई की जा रही है। हमारे विदर्भ और मराठवाड़ा में जितने जलाशय हैं, एक तो वे सूख गए हैं या जिनमें पानी है वह ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। पानी, विशेषकर पेयजल ऐसा संसाधन है जिसकी उपलब्धता सभी के लिए समान होनी चाहिए। लेकिन मुझे दुर्भाग्य से कहना पड़ रहा है कि हम पानी जैसी जीवन आवश्यक जरूरतों को पूरा करने में नाकाम रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से यह समस्या हल होने वाली नहीं है। इसके लिए व्यापक अभियान की आवश्यकता है।

मेरा सदन के माध्यम से सरकार से निवेदन है कि चाहे अकाल हो या अवर्षण, देश के सभी राज्यों और केन्द्र सरकार को मिलकर हमेशा के लिए पीने के पानी की समस्या हल करनी चाहिए।